13

अनजान सफ़र की मंज़िल

आकांक्षा भटनागर*

मानव जीवन में बचपन एक ऐसी अवस्था है, जिसमें बच्चा स्वतंत्र रहकर, बिना किसी की परवाह किए हँसता हुआ अपना समय व्यतीत करता है। लेकिन आज भी कहीं न कहीं बच्चों कि स्वतंत्रता, उनका बचपन धीरे-धीरे छीना जा रहा है। छोटे-छोटे बच्चों से दुकानों, ढाबों, घरों, कारखानों में अमानवीय ढंग से काम करवाया जाता है और उन्हें बहुत कम मज़दूरी दी जाती है। उन्हें घरेलू नौकर बनाकर उनका भरपूर शोषण किया जाता है। इस प्रकार उनसे उनका बचपन छीना जा रहा है। उन्हें पढ़ने और खेलने के अवसरों से वंचित किया जा रहा है। यदि हम बच्चों को सफल देखना चाहते हैं तो यह केवल उचित शिक्षा के माध्यम से ही संभव है, शिक्षा जितनी ज़रूरी लड़कों के लिए है उतनी ही ज़रूरी लड़कियों के लिए भी है, हमें बच्चों के साथ-साथ उनके माता-पिता को भी शिक्षा का महत्व बताना होगा।

शिक्षा के बिना जीवन का कोई भी महत्व नहीं है, शिक्षा सामाजिक, नैतिक विकास के लिए बेहद आवश्यक है।

इस भाग दौड़ की ज़िंदगी में मेरे अपने सपने कहाँ खो गए, पता ही नहीं चला, रोज़ सुबह से शाम तक की ड्यूटी निभाते-निभाते हर रोज़ सबको खुश करते-करते कभी-कभार थक जाती हूँ। सोच में पड़ जाती हूँ कि मेरे कभी खुद के भी सपने होते थे, जिनको पूरा करना मैं भी चाहती थी। आसमान में उड़ान भरना किसको अच्छा नहीं लगता, बिना किसी शर्त के, बिना किसी के डर के, बस मैं और मेरे सपने।

आज भी मैं उसी सफ़र पर हूँ, जहाँ से मुझे अपने सपने को पूरा करना है, मानो जैसे कल ही की बात हो, बच्चों को स्कूल से पढ़ाकर हम सब टीचर निकल ही रहे थे कि अचानक मैं और मेरे साथी एक अनजाने सफ़र की ओर चल पड़े।

रास्ता शांत था और हम सब जैसे बच्चों की बातों में उनके बचपन की शरारतों की चर्चा कर रहे थे, कि अचानक मेरी नज़र दो छोटी फूल के समान लड़कियों पर पड़ी जो एक दुकान के बाहर खड़ी थी और खाना बना रही थीं, मेरे कदम अपने आप रुक गए, दोनों की उम्र दस साल से ज़्यादा नहीं थी। पर वो अपनी उम्र से बड़ा काम कर रही थीं, उनके हाथों में जादू था, जैसे — उस छः साल की लड़की ने मानो रोटी के रूप में चाँद तवे पर डाल दिया हो। उन दोनों

* *विद्यार्थी*, पी.जी. डिप्लोमा (शिक्षण), इग्नू, दिल्ली

को देखकर मेरी आँखों में नमी आ गई, मैं सोच में पड़ गई कि जो उम्र उनकी खेलकूद की है, पढ़-लिख कर कुछ बन जाने की है, वो अपना बचपन बिना कुछ सोचे-समझे इन कामों में खोती जा रही हैं। दुकान ज़्यादा बड़ी नहीं थी शायद इसी कारण से वह बाहर खाना बना रही थीं। वो चिलचिलाती धूप उनके चेहरे की चमक को मानो और बढ़ा रही हो। मैं वहाँ कुछ मिनटों तक खड़ी देखती रही। फिर हम आगे निकल गए। जहाँ से उनका घर नज़दीक था और मेरा सफ़र शुरू हुआ था। दिन बीते और हम फिर उसी रास्ते से गुज़रने लगे। मैं जब भी उस दुकान के पास से गुजरती, मेरे कदम धीमे पड़ने लगते। एक दिन दुकान खाली थी, ग्राहक शायद आज नहीं आए थे। दोनों वहीं बैठी ग्राहकों का इंतज़ार कर रही थीं। उस छोटी लड़की ने मेरी आँखों में देखा, जैसे उसकी आँखें मुझसे कुछ कह रही हो। मुझसे रहा नहीं गया, मैं जा पहुँची उनके पास। उन दोनों की आँखों की चमक को देखकर, मैंने न चाहते हुए भी ऑर्डर किया और आज मुझे मौका मिला उन दोनों से बात करने का। मैंने पूछा — "स्कूल नहीं जाती?" जवाब आया "नहीं...।" फिर बड़ी ने भी यही जवाब दिया, मैं कुछ और पूछ पाती इससे पहले ही आवाज़ आई — "आपका ऑर्डर तैयार है दीदी।" दोनों लड़कियाँ फिर काम में लग गईं। धीरे-धीरे दुकान पर और लोग आने लगे और भीड़ बढ़ने लगी। जितनी भी देर मैं वहाँ रुकी उतनी देर में एक स्वर मुझे बार-बार सुनाई देता रहा — "छोटी हाथ जल्दी चला.... नहीं तो पैसे नहीं आएँगे।" और वो छोटी सी लड़की बिना सोचे समझे अपने काम में तन्मयता से लगी रही। मैं घर की तरफ निकल रही थी, कान में अब भी वही एक आवाज़ गूँज रही थी — "छोटी हाथ जल्दी चला..." उन शब्दों में कुछ था, जैसे मानो वो आवाज़ मुझसे कुछ कहना चाह रहे हों। उस आवाज़ ने मुझे काफ़ी दिनों तक परेशान रखा। मैं उस गूँजती हुई आवाज़ को हर बार महसूस करती और मेरा ध्यान हर काम से हटकर उन बच्चियों के मासूम से चेहरे की ओर घूम जाता। हम सभी अध्यापिकाएँ स्कूल से निकल कर उसी रास्ते से गुज़रते, मानो जो रास्ता हमारा था ही नहीं वो अच्छा लगने लगा। जो बात मैं महसूस कर रही थी उन बच्चियों को लेकर शायद वो बात अब सभी महसूस कर रहे थे। पर कहना कोई नहीं चाह रहा था। दिन बीते उन बच्चियों को देखने की आदत सी पड़ गई थी।

स्कूल में आज सुमन मैडम का जन्मदिन था, सब उनको बधाई दे रहे थे और हम सबने मिलकर उपहार के रूप में एक घड़ी दी, जो कि सुमन मैडम को बेहद पसंद आई, वो समय की बहुत पाबंद थीं समय का सदुपयोग करना उन्हें अच्छे से आता था, सब टीचरों ने जैसे ठान लिया हो, सब शोर मचा रहे थे, पार्टी-पार्टी कर के सुमन मैडम को परेशान कर दिया, सुमन मैडम हम सबमें सीनियर थीं, वो एनजीओ के भी संपर्क मे रहा करती थीं, वे स्कूल में बच्चों की कोई भी समस्याओं का हल वो मिनटों में निकाल लिया करती थीं, स्कूल से निकलते वक्त बातों का सिलसिला शुरू हो गया था, पर आज तो सुमन मैडम भी हमारे साथ थीं, उन्हें अपने घर के लिए समान लेना था, जो उस दुकान से काफ़ी दूर था। पर पता नहीं क्यों वो हमारे साथ चलने लगीं हम सब खुश थे और सब बातों में लग गए, बातें अभी भी चल रही थी और दोपहर के

खाने का भी वक्त हो रहा था, दुकान के नजदीक आते ही मैंने बिना सोचे समझे सुमन मैडम को वही पार्टी देने को कहा, मेरी बात शायद सबको अजीब सी लगी और सुमन मैडम कुछ सोच पाती, तभी मेरे दो चार बार कहने पर मैडम मान गयी मैं बहुत खुश थी।

दुकान पर पहुँचते ही खाने का ऑर्डर किया गया, मेरी आँखें उन बच्चियों को ढूँढ रही थी, दुकान छोटी थी ज़्यादा साफ़ नहीं थी मैंने उस लड़के के साथ मिलकर कुर्सियों को लगाना शुरू किया मेरे इस सहयोग को सुमन मैडम देख रही थी, सुमन मैडम और सब इसी सोच में पड़ गए थे कि आखिर हम पार्टी कहीं और भी कर सकते थे तो फिर यही दुकान क्यों? खाने की प्लेटें लग गईं, मेरी आँखें अभी भी उन्हीं बच्चियों को ढूँढ रही थीं। हम सब खाने के लिए बैठ गए, हमने खाना शुरू किया ही था, कि आचनक देखा तो वो दोनों बच्चियाँ हाथ पकड़ कर दुनिया से बेखबर दुकान के पास आती नज़र आ रही थी। दुकान में आते ही वो अपने कामों में लग गई। छोटी रोटी बना रही थीं तो बड़ी सबको खाना देने में लग गई, उस बच्ची के हाथ में कपड़े के उपर गर्म-गर्म रोटियाँ देख कर बातों का सिलसिला अपने आप शांत हो चला था। अब शायद वो बात जो मुझे परेशान कर रही थी वो सुमन मैडम को भी करने लगी। सुमन मैडम को मेरी बात बिना कुछ कहे समझ आ रही थी। मेरी आँखें उन दो नन्हीं बच्चियों की मासूमियत में कहीं खो गई थी। तभी उस लड़के को मैंने अपनी तरफ आते देखा और उसने पूछा, "और कुछ चाहिए मैडम खाने में?" हमने सिर हिला कर ना कहा। दोनों बच्चियाँ अपना काम छोड़ कर हमारी टेबल साफ़ करने लगीं, सुमन मैडम उसे पैसे देने के लिए खड़ी हुईं। उन्हें खड़ा देख हम सब भी खड़े हो गए। सुमन मैडम ने हमें बैठने का इशारा करते हुए कहा और उस लड़के से बात करने लगीं। सुमन मैडम हमसे दूर खड़ी थीं, शायद इसी कारण हमें उनकी बात स्पष्ट सुनाई नहीं दी।

उस दिन के बाद से वो दोनों बच्चियाँ उस दुकान में नहीं दिखाई दीं। मन मे अजीब-अजीब ख्याल आने लगे, लेकिन फिर भी मन में एक बात और घूम रही थी कि हो न हो सुमन मैडम ने ही कुछ किया होगा। पर ना तो मेरी सुमन मैडम से पूछने की हिम्मत पड़ी और ना उस लड़के से। मन बहुत परेशान था कि आखिर बात क्या हुई। अब शायद मेरा सोचना भी बेकार था।

आज मैं अपने वक्त से पहले स्कूल पहुँच गई, सभी बच्चों को देख कर उन बच्चियों का भी ख्याल आने लगा। आज सोच ही लिया था कि मैं सुमन मैडम से उन बच्चियों के बारे में पूछूँगी। तो किसी टीचर ने बताया कि वो तो एक हफ़्ते की छुट्टी पर हैं। मैं फिर परेशान होने लगी मेरे अंदर सवालों का पहाड़-सा टूट पड़ा हो। पर अब मेरे हाथ में कुछ नहीं था। बस अब यही सोचकर संतोष कर लिया कि कुछ बेहतर ही हुआ होगा और सुमन मैडम के आने पर उनसे पूछ भी लूँगी।

अब उस रास्ते से जाना हमने छोड़ दिया था और मैं भी अब उन बच्चियों के बारे में कम सोचने लगी थी, हफ़्ते बाद उन दोनों बच्चियों को मैंने स्कूल के अंदर देखा, स्कूल की ड्रेस मानो खूब फब रही थी हाथ में खाने का डिब्बा और कंधों पर किताबों का बस्ता, उनकी खुशी देखकर मेरी खुशी दुगनी हो गई और दूर खड़ी हुई सुमन मैडम ने मुझे देख कर मुस्कुराई और उनकी मुस्कान ने मानो मेरे सारे सवालों का जवाब दे दिया हो।

आज वो छः साल की मासूम बच्ची मेरी क्लास की बेस्ट स्टूडेंट है।

आज हमारे देश में इस तरह जाने कितने ही बच्चे अपना बचपन इसी तरह किसी दुकान पर या किसी रेड़ी पर समान बेचते हुए बिता देते हैं। मैं जब भी इस तरह किसी बच्चे को उसका बचपन खोते हुए देखती हूँ, तो महसूस होता है कि सरकार द्वारा निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम जैसी नीतियाँ बेकार हो रही हैं। भारत सरकार इन बच्चों की शिक्षा और बेहतर भविष्य के लिए कई नीतियाँ लागू करती है लेकिन वे नीतियाँ आज न तो स्कूलों में ही ठीक तरह से लागू की जाती हैं और न ही व्यावहारिक जीवन में। माता-पिता अपनी गरीबी की वजह से इन बच्चों को पढ़ने नहीं जाने देकर काम पर लगा देते हैं। और वह नन्हा बच्चा अपना बचपन कहीं खो देता है। आज हमें 'सुमन मैडम' जैसे लोगों की ज़रूरत है। ताकि इन बच्चों के लिए बिना सरकार का इंतज़ार किए खुद अपने स्तर पर कुछ किया जा सके। इस घटना ने मुझे अंदर तक झकझोर कर रख दिया और स्वयं से एक संकल्प भी किया कि जहाँ तक संभव होगा इन गरीब बच्चों को जो विद्यालय तक पहुँचने में असमर्थ हैं उन्हें मुफ़्त में उन बच्चों तक पहुँच कर उन्हें शिक्षा देने का प्रयास करूँगी। आज जब मैं इन बच्चों के साथ होती हूँ, तो याद आता है वही अंजान रास्ता जहाँ मैं उस दिन चल पड़ी थी। आज महसूस हो रहा है कि उस अंजान सफर की मंज़िल अब जल्दी ही मिलने वाली है।